



वलसाड-गुज.। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं विधायक कनुभाई देसाई, पूर्व मेयर सोनल सोलंकी, जिला उप प्रमुख उर्मिा बहन, ब्र.कु. रोहित, ब्र.कु. जसु बहन तथा भाजपा सदस्य।



ब्रह्मपुर-पी.यू.आर.सी। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के पश्चात् समूह चित्र में विधायक प्रकाश पात्र, डायबिटोलॉजिस्ट डॉ. रमेश पटनायक, ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. माला तथा प्रतिभागी बच्चे।



कोटा-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सेंट्रल जेल के डी.आई.जी. सुधीर प्रकाश तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला तथा ब्र.कु. ज्योति।



जबलपुर-नेपियर टाउन। अखिल भारतीय दिव्य नगरी स्लम एरिया सेवा योजना का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए संस्थान के सेक्रेट्री एवं प्रोजेक्ट चीफ प्रमोटर ब्र.कु. ललित, योजना चीफ एक्जीक्यूटिव ब्र.कु. इशिता, डॉ. नीतू वैश्य, डॉ. पुष्पा पाण्डेय, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. संतोष व अन्य।



दुर्ग-छ.ग.। 'सिद्धि स्वरूप योग तपस्या भट्टी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. शारदा, गुज., मुख्य वन संरक्षक प्रेम कुमार, समाज सेवी नेतराम अग्रवाल व ब्र.कु. रीता।



भुज कच्छ-गुज.। कच्छ गुर्जर क्षेत्रिय समाज खंभरा - घटक में सरस्वती सम्मान और समाज रतन सम्मान कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् चित्र में समाज रत्न विनोद सोलंकी, ब्र.कु. रश्मी, ब्र.कु. दक्षा, प्रादेशिक प्रमुख ब्र.कु. बाबु, समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लाधुराम भाई, घटक प्रमुख रमेश परमार, महिला प्रमुख रसीला बहन, युवा प्रमुख मोहित भाई, दिलीप भाई, जीवराम भाई तथा अन्य।

भागीदार... पुण्य कर्म में ही बनें

- गतांक से आगे... पुण्यकर्म में भी भागीदारी होती है तो पापकर्म में भी भागीदारी होती है। जैसे एक कसाई है, उसने किसी पशु को मारा। उसने तो पापकर्म किया, लेकिन उस पशु के मांस को जिसको बेचा, वो दुकानदार भी भागीदार हो गया। उसके साथ जिसने खरीदा वो भी भागीदार हो गया। उसके बाद जिसने घर में लाया और जिसने पकाया वो भी भागीदार हो गया और जिसने खाया वो भी भागीदार हो गया। उस समय अगर कोई मेहमान आ गये और उनको परोसा तो वो भी उस भागीदारी में जुड़ गए। अब ये



-ब्र.कु. ऊषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सारे लोग जो भागीदारी में जुड़े, जब सेटल करने का समय आयेगा तो सबको इकट्ठा सेटल करना पड़ेगा या नहीं करना पड़ेगा? बस में कहीं जा रहे हैं, बस में एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं हैं। जब बस फुल स्पीड पर होती है और कोई जानवर एकदम से रास्ता क्रॉस करता है और उसी समय मर जाता है। वही जानवर पुनर्जन्म लेकर के वही रास्ता क्रॉस करता है। उस जानवर को बचाने के समय बस का ब्रेक असंतुलित हो जाता है। वो बस कहीं जाकर के ज़ोर से टकराई और नदी या खाई में गिर जाती है। बस में सवार सभी पचास लोग मारे जाते हैं। तो कैसे इकट्ठे उन सभी को हिसाब चुकाना पड़ता है! वो संयोग बन जाता है कि

कैसे वो सारी आत्माएं कहाँ-कहाँ से इकट्ठी हो जाती हैं। अब उस समय कोई कहे कि अरे वे निर्दोष थे। निर्दोष उनमें कोई नहीं था। कहीं न कहीं दोष में उनका हिस्सा था। इसलिए वो संयोग रचा। इस ड्रामा के अंदर जहाँ वो हिसाब चुकतू करने का समय आया तो वो हिसाब चुकतू होता ही है। इसलिए कहा जाता है कि दान जब करो तो सोच समझकर करो। क्योंकि कुपात्र को अगर

चला गया तो वहाँ हम पापकर्म के भागी इस प्रकार हो जायेंगे कि पता भी नहीं चलेगा। इस तरह से कई लोगों को अपने

हिसाब-किताब चुकतू करने पड़ते हैं। भावार्थ यही है कि सात्विक दान जो बताया गया है, उसके हिसाब से अगर हम चलें और अगर सुपात्र नहीं मिलता है तो दान नहीं करना अच्छा है। ये गीता में भी कहा गया है। फिर इस अध्याय के अंत में यही बताया गया है कि "ओम तत्सत्"। ओम माना अहम्। अहम् माना मैं आत्मा। तत्व माना समस्त तत्व और सत् माना सद्भाव, सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव। सत्य में दृढ़ता होती है। तो दृढ़ भाव में अपने आपको स्थित करो। जब आत्मा, अपने सम्पूर्ण आंतरिक तत्व ज्ञान, गुण और शक्तियों को श्रेष्ठ भाव, सत्य भाव और दृढ़ भाव में स्थित करती है तब उसका सदुपयोग होने लगता है। - क्रमशः

यह जीवन है...

जिस शरीर की अदाओं पर हम मर मिटते हैं, रात-रात भर करवटें बदलते हैं, मृत्यु के बाद वह आकर्षण कहाँ चला जाता है! आप उसे जितनी जल्दी हो सके घर से निकालने की कोशिश करते हैं उसे मिट्टी कहा जाता है। फिर यह शरीर सुंदर कैसे हुआ? सुंदरता शरीर में नहीं होती, सुंदर होते हैं उस व्यक्ति के कर्म उसकी वाणी, व्यवहार, उसके संस्कार और उसका चरित्र। जिसके जीवन में यह सब हैं केवल वही सुंदर है।

ख्यालों के आईने में...

चिन्ता ?

अगर आप उन बातों एवं परिस्थितियों की वजह से चिंतित हो जाते हैं, जो आपके नियंत्रण में नहीं हैं तो इसका परिणाम समय की बर्बादी एवं भविष्य में पछतावा है।

हार न मानना बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी, जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। इसलिए लक्ष्य की ओर बढ़ें।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया, संपादक,
ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स
न.- 5, आबू रोड (राज.) -307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org